स्नातक प्रथम खण्ड
मैथिली (आनुषंगिक)
First Lecture.

डॉ० राज कुमार राय
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय,
राजनगर (मधुबनी)

अलंकार

अलंकार दुइ शब्दक योग सँ बनल एकटा शब्द अछि। दुनु शब्द अछि - अलम् + कार। 'अलम्' शब्दक अर्थ आभूषण तथा 'कार' शब्दक अर्थ होइछ करनिहार। अतः अलंकार शब्दक अर्थ भेल जे सौन्दर्यकेँ पूर्ण करय, जे आभूषित करय, अलंकृत करय। तात्पर्य जे जाहि उपकरणसँ काव्यक सौन्दर्य पूर्ण होइछ सैह अलंकार अछि।

अलंकारक परिभाषा प्राचीन विद्वान लोकनि निम्नलिखित प्रकारेँ देने अछि।

1. भरत :- अलंकारक परिभाषा भरत मुनि कहैत छथि जे अलंकार ओ साधन अछि जकर प्रयोग द्वारा श्रोता लोकनिक मनमे वक्ता अपन इच्छाक अनुकूल भावना जगा कऽ अपन समर्थक बना सकैत अछि।

2. दण्डी :- आचार्य दण्डीक अनुसारे काव्यक अमरत्वक कारण अलंकारे अछि।

Scanned with CamScanner

काव्य कल्पान्तरस्थायी जायते सदलंकृति।

3. **भामह**:- आचार्य भामहक कथन छनि जे काव्य कतबो सुन्दर किएक ने रहओ किन्तु अलंकार प्रयोगक अभावमे ओ ओहिना शोभा विहिन रहैत अछि जेना कतबो सुन्दर स्त्रीक मुख पर आभूषणक अभावमे कान्तिक दर्शन नहि होइछ-

न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्।।

4. **आनन्दवर्धन**:- ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन अलंकारक लक्षण प्रस्तुत करैत कहने छथि जे जे अंगी अर्थक अवलम्बन अछि तकरा गुण कहल जाइत अछि तथा जे कटक आदि सदृश अंगाश्रित अछि जे अलंकार कहबैत अछि-

तमर्थमवलम्बन्ते येऽङ्गिनं ते गुणाः स्मृता।
अङ्गाश्रितास्त्वलंकारा मन्तव्या कटकादिवत्।।

5. **मम्मट** – आचार्य मम्मटक मतमे काव्यमे रस अंगी होइत अछि। गुण ओकरा उत्कर्ष कयनिहार धर्म अछि। जहिना धर्म, शौर्य आदि मनुष्यक धर्म होइत अछि ओहिना इहो रसक धर्म अछि। अलंकार हार आदि आभूषणक सदृश होइत अछि।

continue to next lecture